

DPN 6777 प्रतिष्ठा विधि PRATISTHA VIDHI

Title :

Run. No. 7502

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19x6.7

Folios 15
missing 1, 11
Chapt. / act /

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्री वज्रमहाकरायः - वनुरदरी, धर्मगड ॥ - - -
Folio 4 - इति श्री ~~वज्रमहाकरायः~~ न्यास पित्राय विधि समाप्त

P.T.O.

इति अष्टि स्थापन ॥

दशक्रिया /

ॐ नमः श्री कृष्ण महाकायः चतुर्भुजः ॥ कलशः सयनः ॥ स ॥ महाकायद्वयाः
द्वन्द्वकम्पकपाठकथायनय ॥ ० ॥ नकसमृद्धमल्लसिन्धुनयश्चगव्यकाय ॥ मधुलधिः
नलवलिकाय ॥ दग्ध्रियाय ॥ कलः सयनः चयसयका ॥ ईश्वर्यिन्नायकाय ॥
करुणासा ॥ ॥ धनद्वन्द्वद्वयाकः स्नानकृद्वागसी ॥ अथाविधिर्थायका ॥ ॥ धर्मिध्वनडा
वध्वमनिध्वमर्दक ॥ चनवत्रनिध्वमत्रवाय ॥ काकाबलि ॥ जनसदनेवाद्य ॥ गुन्दनक
विसर्जन ॥ ० ॥ यश्चगव्यविय ॥ वागवासन ॥ मल्लसचकाय ॥ सुनि ॥ यागश्चडा ॥ शुचः

कु. नवजल नदत्. यिंगल कृष्णविकारिणि नरासि त्रयोऽपि न जवजिन. कश्चि कायधू कष्ट
 खर्वेस्य वीरु नम्या. यतन न कर्त्तव्य. लंकुतादान विह. वाधेनामादिक ध्व. सुवर्ध दिग्विज
 रं. सिद्धे यश्च हयाल ॥ ॥ खक व ॥ उं नमः ॥ श्रीवज्र महाकायाय ॥ दिग्विज. निकाना हाय
 ग. लक मूर्ख. कया डखान. कृष्ण वधू. लाक खाल. निगुं. स्वयन्मिखा. कयाल माला कर्त्त
 माण मालन काखा. वीच वीच उद्ध. मला वील. थदा व. यिजल कडा. जियुं. विज्वय नो. य
 ल सजाय नय. दृष्ट. सीखन ॥ वीच मदान वैकाका ॥ जूनाग विरुखिर्ग. ज्ञाक्रनाग आरु नध

॥ दकि नरु रुन कर्हि. वजन काल. वाम रुन कयाल वलार्ग. खवन रुदाल. सर्व रधि न.
 यश्च मृग रुकन. ललुजिका. कृष्ण. उद्धा कयाल वदना. थल रुहन चाठ ॥ सुद्ध रुन. असी
 रुव रुन. लवे रुत सावयण ॥ ॥ स्नान मधु डाय के वाय ॥ मरु ॥ उं हं. श्रीवज्र महाकायाय
 नस को नाय. यादी आचमन. यगि रुखाहा ॥ मधुल स स्नान वाय ॥ श्री महाकायाय. वज्र यथं
 यद्ध रुं रुं रुं साहा ॥ दाक ॥ उं श्री कालीय x रु वन ॥ उं श्री कालीली संय साहा ॥ रु व ॥ उं श्री क
 कालीय x ॥ धवन ॥ उं महा कालीय x ॥ खना ॥ ॥ धनि द्ध मधुल ॥ ० ॥ यिधु मधुल ॥ उं

चरुगहायसाहा॥६८॥ उँकलंजरेनवायसाहा॥खन॥ उँकालांकलाय॥थनना॥ उँकला
 यसाहा॥७०॥ उँगुहल्लोहासायसाहा॥खनकाथर्क॥ उँलमीवनरुजनायसाहा॥खनथथ
 ॥ उँघाचोवकालायसाहा॥अवर्थथ॥ उँकिलिकिलाववाडनायसाहा॥अवकाथर्क॥ ॥
 यंशान्नयूजा॥रुनि॥ लंबका, लंबचाचि, लंबगज, यशुयनि, वीनहाण, लंबमवा, लंबनील
 लंबमेल, लंबमसि, जगधच, लंबदिनेष्ट, जलजालंरुका, लंबकहा, गिमुवननरुवसुयनेवा
 यकलं, लंब्यादी, राजरावाऊ, यतिशुभमुवा, चक्रवर्हियविर्ता॥ अघविया॥ अघसुताय अक

नइइ, क्रसकनसविया॥मकु॥ उँझीसाहाकालायवद्धसासनसैलककाय, अकचिणलताया, य
 काचि, सत्वानेन्रधिनमासादिरुक्रध, यियाय, गुविशुद्ध, सताय, लंदमर्घ, गृद्ध, शृगृकायय
 मम, दानयक, शान्ति, यष्टि, नक्राकरुहंसाहा॥ अखयूजा॥ काथना, वागेविया॥ उँझी, ऊँहंरु
 मयमांस, यथायकादि, गालयागालादि, अस्तनागदवदानक, यक्रमाकसादिरुका, गृद्ध, लंद
 वलि, हाहाहाहं, सैरखादि, रूहं, ऊँहं, महाहृहास, गऊं, रुक्म, मय, ऊँदी, दानयक, मना
 शिनायित, सिद्धिकरुहंसाहा॥ यंशान्नयूजा॥रुनि॥ हयका, कचन्या, द्विवमकलिक



कुदना, दवतालाकयाला, रुतासंवागिषसासना, रुतायकरिद्धज्वाकृयममह
 महावदी, जीष्वायमक्रियांभुता, कतिष्वामिजगद्ध, यथासक्यः पुत्रान, जन्मक
 यादाय, सजिष्वा सचतमकुल, सहितौ सवै, सानिष्वा कहुंमहर्षी, ध्याय ३॥ जन्मसं
 जन्मः सरुलंजितिनचम, समय, सचवदनां, सतिनाहनसं सया, जवैवलिंकरुविष्वा
 मिवाष्वा चिरु कचनस, नकागनकचा, सति, समान्यस्यानसंजय, जन्ममदिवसादृज
 रुमकदवतलः सतिष्वा कारुवदयं, सचवदनिर्मठमन् ॥ ० ॥ धनदवयजा, जन्मविधि

श्री॥ ० ॥ गतः समुद्रं निर्यातः दृष्ट्वा जं दृष्ट्वा ॥ न्यासं च वसुं च गच्छ चायं यदु ॥ ननु
 ॥ अहो वैष्णवे यश्च मृत उच्छलति किं ॥ यत्र स नया ॥ नीर्थं यालं खनय पर्वत ॥
 यत्र आचार्यः समुहर्तुं यत्र याति सारथी ॥ आकिं कुण्डं किं सखी खनय न सखी ॥ यत्र थायतः ॥ यत्र
 यत्र सखी सखी सखी ॥ सावना यथा विधिर्य यज्ञा ॥ धनं डाव दवया कस्ताने रुद्रा गय ॥ यत्र
 हाऊर्यं तय गाथा ॥ रावावन् सर्वविद्या राजं न मा मुत्त ॥ ३ ॥ धनं रुद्र वली रयिः
 काय ॥ खवन जाय ॥ डावन यश्च विजानिका यत्र दवया कहिन ॥ यत्र गृहिण ॥ रावृसा न

याङ्गनडासी आय ॥ ॥ उं वज्र धन वरुं रुद्र दय दय वजय हा ॥ धनं कुल ॥ १०६ ॥ धनः
 डाव ॥ खान सुद्धा ॥ यत्र स इत नया ॥ डाव गयिला क ॥ उस्मि वृद्धे ॥ अतमसि ॥ धनं न्यास ॥ यत्र
 सनया ॥ सिज च सचा डन काय याडा ॥ यश्च विजानिका तचिया डनया डाहा दिष्टितय ॥ सि
 ॥ कचयितय ॥ ध्ययाय ॥ यंचाय हा वयडा ॥ दवया कचा ॥ निसा सुद्धा नया यत्र स वलि
 याह तय ॥ दवखदिका यत्र नय जीतया ॥ ० ॥ धनं डाव याडा दय ॥ यथा विधिर्य धन डाडा ॥
 दवयडा याद्या वसुडा यथा विधिर्य ॥ ॥ खान रुद्रा गय ॥ यथा विधिर्य ॥ निनाडा

२०
 १५
 १०
 नाकनताया ॥ लाहायिचका ॥ स्नान ॥ विधिर्थादवताहति ॥ यधमो ॥ धनअडागदजवनि
 विया ॥ आगमइलसा यधधराहायका ॥ धकादिमछलधियका ॥ धुमि ॥ सयाननय ॥ चनपः
 अ ॥ हावाइति ॥ ॥ धनसायूजायाय ॥ एवाक ॥ निमिचासगस्यनके ॥ दऊनाविया ॥ सा
 धियननचि ॥ दयचिय ॥ सानसनेसाचक ॥ चिरासथय ॥ सिदवइरसा ॥ क ॥ दिनअडा
 ग्रि ॥ धनसधडाडा ॥ अहसइय ॥ अगलाहाइरसा ॥ खसिसकाय ॥ रसिजन ॥ हाइरसा
 गायारिनकाचका ॥ ॥ विसऊत ॥ लासर्वध ॥ साचार्यनक्यचि ॥ य ॥ अयहनयका

५
 ७२
 समय ॥ ० ॥ निज्ञानासयिकायविधिसमाकः ॥ ॥ अरु ॥ नमःशावऊसना
 यडाधनैनासदथनविधिमाहा ॥ ० ॥ नकस्यनयमऊगार्थ ॥ दजवना ॥ अग्रिकले
 विधिर्थायनम ॥ यथाविधिर्थायकायधगयचुआय ॥ न्यासघन ॥ नमस्यइकायाक
 अयाऊडासनया ॥ यधगयनहाय ॥ सिधनयक ॥ यथाविधिर्था ॥ सिधसमाधिइ ॥ अय
 यथेनधुनडाव ॥ ॥ धन ॥ न्यासघनसंदनयाक ॥ सानकहावनयका ॥ रावना
 ॥ रागनसधविज्ञानाऊनमासु ॥ न ॥ ॥ धनदेवयाकाथासय्यअगयनहाय ॥ धननि

三

दिव्यामृतमृकन॥ स्नानं कुरुतः॥ डाडा, आयया डाडा॥ दिव्याङ्गि नमः॥ ॥
 वयस्य निराञ्जनञ्चया॥ रीराय हा नय्या॥ ०॥ थन न्याज घन स, हिडा, यश्चर्विसमि
 का॥ रुडाडा, नात्र सेका चियाडा, दिव्याङ्ग संचियाडा, मृनाचायान, जडान डाडा॥ म
 या॥ ॥ उँ वरुण नव देहें देहें रुद्ध दस्यु वज्रय हाडा॥ ०॥ धगुलिका यश्चर्विस
 नस्यै रुनद वसक न्या॥ न्यास घनया, लंखन, द्रुसकन स, स्नानयायाय व्ययसा॥ ॥
 ल॥ रीराय हा नय्या॥ थनद न्याका॥ डातक मनि स्या॥ दिष्टिदान नाग थायायडा॥

३३

० ॥ नूनि याज्ञानविधि ॥ गार्क ॥ ७ ॥ गुरु ॥ १४ ॥ नमामः श्रुतांथाय ॥ गता
नललाजिन्नादय ॥ ॥ साचनक्रानिलादिठिकायमानरियवाधिकचतुर्लुलाद्व
माकाया ॥ गणप्रलजिनायुवृणियंवाधिकद्वैयुलडमानचतुचसुगयादयकायुकानि
खानय ॥ गडदवमानय्यामस्यमस्यकायुक ॥ गद्वेदिदिङ्गचतुःकायुकानि ॥ गद्व
दिदिङ्गिदिङ्गचतुःकायुकानि ॥ ॥ ययूकास्ययनविधिधिः ॥ ययूकास्ययनचक्रज ॥
ययूविधिधिः ॥ जहूकदहननवनि ॥ धनडाडा ॥ जयविधिधिः ॥ ययू ययूगद्वकायसिच

गयका॥धनडाडा॥जिसमाधि॥कसय॥धनडाडा॥वधाविधिथी॥नलजिला॥त्वहा॥संख
 नेवनहाय॥यंअगव॥यक्षसृग॥यक्षगधनहाय॥स्नानकृशालनयधूय॥निलाअना॥न
 नायिमधुकायक॥नैका॥अहा॥वनत॥दाकैवृ॥आखकु॥नयत्र॥अहायन॥धयादअन
 र्शसि॥धयादवन॥हल॥यंरायहाययुको॥जायमकु॥आसिआशा॥१०८॥धनिमधुका
 थसा॥॥युवेकायुका॥का॥मनजिल॥लीकैवृ॥कमुनि॥धयादअन॥अहायन॥लुकि
 जि॥धयादअन॥नील॥जायमकु॥इंगःइं॥युआ॥१॥धनियुवेकाथसा॥॥॥

दक्षिणकायक॥युवा॥हनधन॥नायरनिवृ॥कृकुमा॥धयादअन॥नयत्र॥अहायन॥लुस
 ल॥युथराग॥जायमकु॥नैवौह॥३॥धनिदक्षिणकाथसा॥०॥यधिमकायक॥आ
 इरामल॥दियुनि॥काइरनिवा॥कयुला॥धयादअन॥लयन॥अहायन॥नकासखा
 नधना॥यनेराग॥जायमकु॥कीमैदीशा॥युआ॥४॥धनियधिम॥०॥उरुनकायक
 ॥मासनीलाथनि॥अयुना॥जितायाह॥नील॥धयादअन॥अहायन॥लीगरु॥नथन
 मल॥जायमकु॥गुंकेवृ॥उरुनकायक॥५॥नदहि॥वाक्युवेकाथसा॥रायहास

नसाञ्जनं शृङ्गनाम्बुलं अगुत्रं ध्यादडानं लयत्रं आहायांला ध्यादडानं ज्ञेयां आय
 मनु ॥ उं वज्रवज्रि ॥ ५ ॥ दक्षिणकायक ॥ मूकलीनं कृशहावालं ध्यादडानं
 लयत्रं आहायात्रं त्रत्तं गाननं आयमनु ॥ उं वज्रवज्रिणिगं ॥ १ ॥ यश्चिमकायक
 खाननां सुवर्णमाषि नक्षत्रमलं त्रयं वदना ध्यादडानं त्रयत्रं आहायत्रं त्रत्तं यत्र
 ॥ आयमनु ॥ उं धर्मवज्रिनिदीष्टा ॥ ६ ॥ उल्लुकायक ॥ युका कंठमाषि जटासंख चक्र
 लि ॥ ध्यादडानं लयत्रं आहायत्रं त्रत्तं ल ॥ आयमनु ॥ उं कर्मवज्रिणी ॥ ७ ॥

मूलकायसा कागनं हाकरियति विमलं रत्नं ध्यादडानं त्रयत्रं आहायत्रं त्रत्तं
 ताम्बु ॥ आयमनु ॥ उं वज्रत्राष्ट्रं ॥ १० ॥ नैषाद्यकायसा निसि यिर्गुत्तनं रुनधि
 ध्यादडानं त्रयत्रं आहायत्रं त्रत्तं ॥ इदं मलिका ॥ आयमनु ॥ उं वज्रमालागं ॥ ११ ॥ वयं
 वाकायसा हाकरहासु सिद्धलं शुक्रमात्रं सलया ॥ ध्यादडानं लयत्रं आहायत्रं ध्या
 दडानं त्रत्तं वदना ॥ आयमनु ॥ उं वज्रगतदीष्टा ॥ १२ ॥ ज्ञानकायसा सागुलनठ
 काययन्तं कयत्रं ध्यादडानं लयत्रं आहायत्रं ध्यादडानं त्रत्तं रुटकि ॥ आय

मनु॥ उं वज्रनृत्यम् ॥ १३ ॥ धूमिधूनडाडा काथयनिं यक्षाय हायेडा धूनडाडा ॥ वज्रध
 तुदग्नित्रियाहय ॥ धूनडाडा सिजयनिनकाय ॥ यिलसियायात्रसत्रयनिनयन्त्र ॥ कमि
 हाधयूजा ॥ यिदिकाथयन ॥ यिलसिधन स्वसिवाय्यदेयी ॥ धूमिधूनडाडा मलाचाये
 नसंसाडाडा ॥ अग्निस्वायनयास्यहय धूनडाडा दनगाहनि ॥ यिनसिसा ॥ स्नानकृशालनस्य
 स्नानना ॥ कालेष्ट ॥ अक्कायनचक्रं गइयनिस्माकात्रजे किञ्चदलयमं गइयनिडकाल
 हचवुमधुर्ले गइनिष्ठा ॥ कात्रजयनमाधी ॥ स्वस्ववज्रयिकाविरावा ॥ कलमंस्नानमर्त

सहदीजदिनधनीगं गणाकुडावा ॥ सहदीजमयस्नानधगगादि कलसअल्लि ॥ लयिंति
 यो सय्यके ॥ धूय निलाऊन ॥ लाहामि नकास्नानत्यथाविधेय्युजा ॥ यिलसिधियो जाय
 मनु॥ उं नमो गवत वेलाचन यवेकपुत्राया गथागतायाहेक सम्माकृम्वदायागद
 वा ॥ उं १२ समय १२ साक २ दाक २ गस्मालाक निलात्रमनिनाकल निवोहयथावनि
 महापऊ सवेवृद्धाता विरुतां धिस्मिन्खादा ॥ २ ॥ उं धमो धागुगरोखादा ॥ अग्निश्रु
 कास्तयना ॥ ॥ धनेलिदगकि या जागकमनि स्या ॥ जाजमान स्नानयाह जानकं त साव

कायुष्टिकादिस्तु संस्तुता ॥ अमुं कारुण्यं महावती ददता कल्याणं साहजिष्वाती प्रकल्पयः
 सर्वसत्त्वार्थयति हतुनी वीजयुग्मं मदाहूतं मधिस्रय कर्तुं सद्वैशाख्यं ॥ अथ नमः ॥
 उवाक कृष्ण उवाच ॥ अहो वदस्व नवो वदामि सदाशा उवाच ॥ वेदाशा सप्रज्ञं सुमया
 हं ॥ यथा विधिं यथा ॥ सहदीपजगन्मिरिः ॥ अथ माकृया ॥ यवधव दद सदी ॥ देवत्व
 दयक ॥ धनियुः सवनय ॥ सयाडामनु आय यक स ॥ उवाच ॥ वज्र उवाच ॥ मया मया म
 तुलधि प्रजा कृता यथा विधिं शला ॥ ० ॥ नित्य सवनवि समाया ॥ ॥ शुभम्

सुसम्वदा ॥ ० ॥ उवाच ॥ अहो वदस्व नवो वदामि सदाशा उवाच ॥ वेदाशा सप्रज्ञं सुमया
 हं ॥ यथा विधिं यथा ॥ सहदीपजगन्मिरिः ॥ अथ माकृया ॥ यवधव दद सदी ॥ देवत्व
 दयक ॥ धनियुः सवनय ॥ सयाडामनु आय यक स ॥ उवाच ॥ वज्र उवाच ॥ मया मया म
 तुलधि प्रजा कृता यथा विधिं शला ॥ ० ॥ नित्य सवनवि समाया ॥ ॥ शुभम्

यथाविधिर्थायुजा सीसमाधियर्थेनं नडाडां कृत्वा युजा अग्निस्त्रयना जन्माद् दनय
 जा दवगाहनि उधमी धनडाडा धनज स्नानन च जा कवेने विधिर्थायुजा जाय उव
 यकृदं धनलि च जूटया सी सानकृदं नतया सावना यथाविधिर्थायुजा यथासमय
 अग्न्यनहाया जाय उवक कमीको उवक कमीको उवक यकृदं उवक सोमिवं धमक
 न काययाडाडा चास जूटया सीदय धनर ॥ कमिहाधयुजा याय डा भाचकीनय स
 मि वजजक मकुन स्नाननकृदं ॥ दकनाविय यय अत्रानविय सकल दिगविदिगस

मृत्पिहीना ल्दं ज्यो मकुन अत्रानकृदं सीसावना सीहीसीहीदं स्वाहा निदान
 गायत्रिलल मधुनायै ॥ मुनिना नमस्तु महादवी त्यादि ॥ कामहाधयुजा दक
 ककनाहुलि वरुन नमस्तु ॥ गठनो वृत्रिदिरिः सम्यक् क्रिमा यय ॥ सा जूट
 या लवकाय ॥ कामा मसचक मधुन सी जूट नैराय वाय ॥ सीनकान
 वृत्तायय ॥ जूटयाय सा या नसस्य सुखिना धन नि सनक ॥ लुयत्र डाहायत्र क
 यल यदं नया सावना ॥ उव कात्रमान् सस्य यय या अता ॥ कल सज्जमान विच ॥

मनु॥ ईयमाहास्यसाहा॥ घृणाहर्निदयान्॥ सूत्रायानन् सडावगयाद्यत्रसधिय
क॥ धनिधूनडाण। कायसावका॥ कमीचार्चन॥ पूर्व॥ उँघघ, द्याठय२ सवेइहान
हँहँहँ कीत्रय२ सवयायानययनहँहँ वजसङ्कल, उँवजकीलय, वजधनमारूप
यनि॥ सवेविमयकानां॥ माहात्म्य२ लूनिनिनिविद्यंरावयन्॥ दिगैदिगसंगाय॥
दिगयाश्वाहानयडायाय॥ ६३॥ R